

सांख्य दर्शन में व्यक्तित्व की भूमिका

डॉ. नैनसी

कल्याण नगर, कुरुक्षेत्र

सांख्य दर्शन का संक्षिप्त परिचय:

भारतीय षड्दर्शनों में सांख्य दर्शन महत्वपूर्ण दर्शन माना गया है। सांख्य मत के विचार श्वेतोपनिषद् व कठोपनिषद् आदि में भी पाए जाते हैं। इसमें वहां त्रिगुण, पुरुष, प्रकृति, अहंकार तन्मात्राएँ आदि की चर्चा की जाती है।

सांख्य दर्शन ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मौन है। उनमें जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष के परस्पर सहयोग से तत्व, रजस् और तमोमय त्रिगुणात्मक जगत् की उत्पत्ति होती है। प्रकृति के विभिन्न रूपों में ही मन, बुद्धि, अहंकार, ज्ञानेन्द्रियाँ आदि कहा जाता है। सांख्य दर्शन के जन्मदाता कपिलमुनि हैं। “सिद्धांत कपिलो मुनिः” सांख्य का अर्थ सं. = सम्यक। ख्या = ज्ञान, अर्थात् सम्यक ज्ञान इस दर्शन से होता है। संख्यात्मक के विशेष गुण के कारण हैं। इसे सांख्य दर्शन कहा जाता है। ‘संख्यान्ते गणयन्ते तत्त्वान् यस्मिन् तत् सांख्यम्’ सांख्य दर्शन में प्रमुख दो मूल तत्व माने गए हैं। पुरुष एवं प्रकृति। इसमें तीन गुण विशेष माने हैं।

संघात-परार्थत्वात् त्रिगुणादिविर्ययादधिष्ठनात्।

पुरुषोऽस्तिभेक्तृभवान् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः। सांख्यकारिका

सांख्यदर्शन में तीन प्रमाण माने गए हैं -

दृष्टमनुमानपाप्तवचनं च सर्व प्रमाणसिद्धत्वात्।

त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेय सिद्धिः प्रमाणाद्धिः। सांख्य कारि०

प्रत्यक्ष प्रमाण - जो ‘दृष्टम्’ अर्थात् इन्द्रिय के द्वारा सिद्ध हो।

अनुमान प्रमाण - जो -प्रत्यक्ष’ ज्ञान के पश्चात् हेतु के द्वारा सिद्ध हो।

आप्तवचन प्रमाण - जो सिद्ध पुरुष या ईश्वर के वचन हो। इसमें महद् तत्व भी विषय माना गया है जिसके चार भेद प्रमुख हैं। सांख्य दर्शन के आधार पर प्रकृति पहले पुरुष को भोग, सहयोग से, तीनों गुणों द्वारा, मध्य बुद्धि, अहंकार, पञ्चमहाभूत ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ इत्यादि से लिप्त कर, बाद में सभी वस्तुओं का विक्षेप करके कैवल्य (मोक्ष) की प्राप्ति कराती है, मानव की मुक्ति का साधन बनती है।

सांख्य दर्शन में व्यक्तित्व विकास की भूमिका:

सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष में दो मूल आधार माने जाते हैं। इनमें प्रकृति जड़ तत्व है पुरुष चेतन है निष्क्रिय उदासीन है अब प्रश्न यह है कि प्रकृति अचेतन है और पुरुष चेतन, तो ये दोनों कार्य कैसे करते हैं। सांख्यकारिका में कहा है -

“पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य

षडङ्गवन्धयुं भयोरपि संयोगस्तत् कृतः सर्गः”

प्रकृति पुरुष का दर्शन चाहती है और पुरुष को भी कैवल्य प्राप्त करना है। प्रकृति भी पुरुष को मुक्त देखना चाहती है। इसलिए सभी भोग पुरुष को कराकर फिर सभी का विक्षेप कर लेती है और महद् तत्व को उत्पन्न करती है। यह व्यक्तित्व विकास का प्रथम चरण उत्पन्न करती है। यह व्यक्तित्व विकास का प्रथम चरण है। महद् (बुद्धि) से अन्य तत्वों के यथार्थज्ञान में सहायक करके पुरुष के व्यक्तित्व का विकास करती है।

“अध्यवसायो बुद्धिः”

बुद्धि विषय का निश्चय करती है, इसके धर्म, ज्ञान, विराग व ऐश्वर्य चार सात्विक गुण हैं। इसके विपरीत चार तमस गुण हैं। बुद्धि से अहंकार होता है। अहंकार से सृष्टि का दो प्रकार से विकास होता है। सात्विक से ग्यारह की, तामस अंश से पंच तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है। सात्विक अंश में मन ग्यारहवां मुख्य तत्व होता है। यह न तो कर्मेन्द्रिय है और न ही ज्ञानेन्द्रिय।

उपयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च साधम्यति।

बुद्धि तत्व में सभी विशेषताएँ प्रकृति की हैं। वह प्रकृति की पुत्री है। परन्तु उसमें पुरुष का प्रतिबिम्ब होता है। वह बाहरी संसार के क्रियाकलापों को जानती है, उसी प्रकार पुरुष भी बुद्धि की क्रिया के साथ क्रियावान् ज्ञात होता है। यद्यपि पुरुष सुख-दुख का भोक्ता है तो नहीं, फिर भी वह इसे सुख-दुख समझता है। इसी आधार पर वह बन्धन मानता है।

**तस्मान्न बध्यतेऽयद्धा न मुच्यते नापि संसरति कश्चित्।
संसरति वध्यते मुच्यते च नानाश्रयते प्रकृतिः सा. कारि.**

प्रकृति अपने कार्यों से अर्थात् बुद्ध के सात भावों से जैसे बन्धन करती है वैसे ही ज्ञान द्वारा अपवर्ग भी सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त २५ तत्वों निरन्तर मनन से एवं निदिध्यासन से एक विशेष ज्ञान जागृत होता है। और पुरुष प्रकृति के सभी कार्यों को देख-रेख अलग हो जाती है। यही सम्यक् ज्ञान कैवल्य कहलाता है, तब प्रकृति का केवल ज्ञानरूप ही रह पाती है। पुरुष का यही दर्शन ही ज्ञान कहलाता है जिसके जागृत होने पर या विवेक ज्ञान की प्राप्ति पर संसार से मुक्ति प्राप्त करता है।

**तेन निवृत्तप्रसावामर्थवशात् सप्त रूपविनिवृत्ताम्।
प्रकृति पश्यति पुरुषः प्रेषक वदवस्थितः सुस्था। सांख्यकारिका**

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का लक्ष्य सांख्यदर्शन में व्यक्तित्व की भूमिका का ज्ञान कराना है। प्राचीन काल में किस प्रकार से सांख्य दर्शन शास्त्रों ने व्यक्ति के जीवन को प्राप्त कराने में किस प्रकार सहायक रहे आधुनिक युग में व्यक्तित्व की बदलती धारणा का उचित विश्लेषण एवं सांख्य दर्शन के सिद्धांतों से पुनः मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित रूप दिया है। प्रयोगात्मक अध्ययन के रूप में उपरोक्त विषय का समन्वय किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. सांख्य कारिका-आचार्य ईश्वर कृष्ण
२. भारतीय दर्शन, आलोचना एवं अनुशीलन - चन्द्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसी लाल दास वाराणसी
३. भारतीय दर्शन - डॉ. राधाकृष्णन बी.आर. चौहान आजा पब्लिकेशन्स कुरुक्षेत्र
४. सर्वदर्शन संग्रह - डॉ. उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।